एशिया में बढ़ते चीन के कदम और भारत पर इसका प्रभाव

पूनम रानी
शोधार्थिनी
इस्माईल नेशनल महिलापी0जी0 कॉलेज, मेरठ
Email : choudharypoonam673@yahoo.com

सारांश

भारत और चीन एशिया की ही नहीं वरन् विश्व की दो महान सभ्यताएँ रही हैं। यही कारण है कि दोनों देश आज भी हजारों वर्षों पुरानी सभ्यताएँ और संस्कृति को जीवित रखे हुए हैं। प्राचीन काल से ही भारत और चीन के बीच सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक संबंध, विद्यमान हैं। बौद्ध धर्म भारत से ही चीन पहुँचा और फला–फूला। दोनों देशों के मध्य से निरन्तर संबंध चलते रहे। इसी बीच 1947 को स्वतंत्र हुआ वहीं दूसरी ओर 1949 में चीन में साम्यवादी सरकार अस्तित्व में आई। भारत ही विश्व का वह प्रथम देश था जिसने चीन की साम्यवादी सरकार को मान्यता दी।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 15.03.2020
Approved: 28.04.2020

पूनम रानी

एशिया में बढ़ते चीन के कदम और भारत पर इसका प्रभाव

RJPP 2020,
Vol. XVIII, No. 1,
pp.088-095
Article No. 009

Online available at *:*
https://anubooks.com/?page_id=6391

प्रस्तावना

भारत और चीन एशिया की ही नहीं वरन् विश्व की दो महान सभ्यताएँ रही हैं। यही कारण है कि दोनों देश आज भी हजारों वर्षों पुरानी सभ्यताएँ और संस्कृति को जीवित रखे हुए हैं। प्राचीन काल से ही भारत और चीन के बीच सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक संबंध, विद्यमान हैं। बौद्ध धर्म भारत से ही चीन पहुँचा और फला–फूला। दोनों देशों के मध्य से निरन्तर संबंध चलते रहे। इसी बीच 1947 को स्वतंत्र हुआ वहीं दूसरी ओर 1949 में चीन में साम्यवादी सरकार अस्तित्व में आई। भारत ही विश्व का वह प्रथम देष था जिसने चीन की साम्यवादी सरकार को मान्यता दी।

इस समय दोनों देशो के संबंध आमोद–प्रमोद के काल से गुजर रहे थे। हिंदी–चीनी भाई–भाई के नारे से आकाश गूँज रहा था। दोनों देशो के मध्य सब कुछ ठीक चल रहा था कि चीन ने 1962 में यकायक भारत पर आक्रमण कर दिया। यह चीन का गहरा विश्वासघात था। इस आक्रमण ने भारतीय विदेष नीति की कमर तोड़ दी। (1)

इस विश्वासघात के बाद दोनों देशो के संबंधों में शिथिलता आ गई। लेकिन पुनः दोनों के संबंधों में कुछ गरमाहट सी आ गई है। दोनों देशो के मध्य यात्राएँ प्रारम्भ हो गई हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि हमारे पड़ोसी देश चीन का यकायक इतना प्रेम भारत पर क्यों आ रहा है ?

भूमण्लीकरण के बाद विश्व की स्थिति में कुछ परिवर्तन आया। इसी बीच चीन ने भी अपना रुख बदला। चीन ने भारत को घेरने और एशिया में अपना प्रभाव बढ़ाने का अथक प्रयास कर रहा है। वह भारत के पड़ोसी देशों को अपने पक्ष में कर रहा है। इन पर भारी धन खर्च कर रहा है। (2)

चीन भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान से अपनी नज़दीकियां बढ़ा रहा है। चीन ने पाकिस्तान के साथ अपनी कूटनीतिक संबंधों का प्रारम्भ 1951 में ही कर दिया था। दोनों देशो के मध्य 1963 में सीमा विवाद पर समझौता भी हुआ जिससे दोनों देशो के संबंध में ओर निकटता आई। जब 1965 में भारत–पाक युद्ध हुआ तो चीन ने पाकिस्तान को पूरा सहयोग दिया। जिससे भारत और चीन के मध्य संबंधों में और अधिक दरार आ गई। चीन पाकिस्तान को विमान, युद्ध टैंकों, मिसाइल और बख्तरबंद गाड़ियों को निर्यात कर रहा है। चीन पाकिस्तान को रिझाने का पूरा–पूरा प्रयास कर रहा है। यहाँ तक की पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम को चीन ही सहायता प्रदान करता है। चीन ने चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारे का निर्माण किया और चीन बहुप्रतिक्षित परियोजना वन रोड वन बेल्ट का भी एक महत्वपूर्ण भाग है। चीन ने पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह को आरक्षित कर लिया है। चीन पाकिस्तान को एक सैनिक चौकी के रूप में प्रयोग कर रहा है किंतु पाकिस्तान को चीन की यह चाल समझ में नहीं आ रही है। वह चीन के ऋण जाल में फंसता ही जा रहा है जो न केवल पाकिस्तान बल्कि भारत के लिए भी चिंता का विशय है। इससे भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो गया है।(3)

चीन भारत के दूसरे पड़ोसी श्रीलंका के साथ भी यही नीति अपना रहा है। दक्षिण की ओर स्थित श्रीलंका में बढ़ते चीनी प्रभाव ने भारतीय रणनीतिकारों की चिंता बढ़ा दी है। चीन ने

श्रीलंका के बंदगाह हम्बनटोटा को 99 वर्षों के लिए लीज़ पर ले लिया है जो कि भारत के लिए चिंता का विषय है। इसके साथ चीन श्रीलंका में भारी धनात्मक निवेश भी कर रहा है इसका परिणाम यह है कि चीनी कम्पनियां स्थानीय लोगों से भारी भरकम कर वसूल कर रही हैं। इससे चीन को तो आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा है किंतु श्रीलंका के लिए यह हितकर नहीं है। श्रीलंका में इस चीनी हस्तक्षेप से भारत का राजनीतिक, आर्थिक हित प्रभावित हो रहे हैं जो भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए हितकर नहीं है।(4)

यह बात ध्यान देने योग्य है कि भारत के दक्षिण सिरे पर स्थित यह द्वीपीय देश यूरोप से लेकर पूर्वी एशिया तक सभी प्रमुख समुद्री संचार गलियारों तथा बड़े तेल निर्यातक एवं तेल आयातक देशो के बीच स्थित है जोकि इसे महत्वपूर्ण भू राजनीतिक स्थिति प्रदान करते हैं। यही कारण है कि चीन को यह देश आकर्षित कर रहा है। वह श्रीलंका को अपने कब्जे में लेकर इस मार्ग का अपने अनुसार संचालित करना चाहता है।(5)

चीन भारत के सभी पड़ोसी देशो में अपना हस्तक्षेप बढ़ा रहा है। चीन की वन बेल्ट वन रोड परियोजना उसकी इसी कुटिल कूटनीति का परिणाम है। चीन द्वारा प्रस्तावित वन बेल्ट वन रोड परियोजना पुराने रेशम की तर्ज पर ही बनाई गई एक परियोजना है जो एशिया, अफ्रीका और यूरोप को जोड़ती है। चीन कहता है इस परियोजना से सभी देशो को आर्थिक लाभ मिलेगा। संबंधित देशो को रोज़गार प्राप्त होगा। भारत चीन की इस परियोजना के पक्ष में नहीं है। क्योंकि भारत का कहना है कि इससे उसकी सम्प्रभुता का हनन होता है। इस परियोजना के तहत चीन–पाक आर्थिक गलियारा भी शामिल है जो कि पाक अधिकृत कश्मीर से गुजरता है जोकि भारत का भाग है तथा इसे लेकर भारत–पाक सीमा विवाद चल रहा है। इस गलियारे के बनने के बाद चीन के भारत में आर्थिक हस्तक्षेप के साथ राजनीति हस्तक्षेप करने से इंकार नहीं किया जा सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि अतीत में जब भी चीन शक्तिशाली हुआ है तो उसने अन्य देशो में हस्तक्षेप किया है।(6)

पड़ोसी देशो के साथ चीन हिंद महासागर में अपना हस्तक्षेप कर रहा है। हिंद महासागर दोनों देशो के मध्य समर का क्षेत्र बन गया है। भारत जिस तरह की भूमिका दक्षिण एशिया में निभाना चाहता है वह चीन को रास नहीं आ रही है। चीन भारत को रोकना चाहता है क्योंकि एशिया में भारत वह देश है जो चीन की कुटिल राजनीति को टक्कर दे सकता है और दे भी रहा है।(7) हिंद महासागर को भारत की चौखट माना जाता है साथ ही हिंद महासागर क्षेत्र का सामरिक, आर्थिक, कूटनीतिक और पर्यावरणीय क्षेत्र में हमेशा से विशेष महत्व रहा है। विश्व की पुरातन सभ्यताएँ, संस्कृतियों का उद्‌भव और विकास इसी क्षेत्र में हुआ। विश्व के अधिकांश सामरिक, आर्थिक व राजनेतिक विश्लेषक इसे सर्वाधिक सम्भावनाओं वाला क्षेत्र तथा विश्व का भावी पावर हाउस मानते हैं। पिछले कुछ वर्षों से विश्व क बड़ी शक्तियों की दृष्टि इस क्षेत्र पर टिकी हुई हैं। उनमें से भारत और चीन भी एक है।(8)

जिस प्रकार हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की गतिविधियाँ संचालित हो रही उसे देखकर भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा उत्पन्न होता दिखाई दे रहा है। आई बी और रॉ की कुछ रिपोर्ट

ने हिंद महासागर क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली भारतीय सुरक्षा की चुनौतियों की ओर स्पष्ट रूप से इशारा किया है। इन रिपोर्ट जिन गम्भीर समस्याओं में सबसे महत्वपूर्ण है हिंद महासगार स्थित अण्डमान निकोबार दीप समूह के बीच मानव रहित द्वीप, जो चीन के साथ–साथ म्यांमार के निशाने पर भी है। इन रिपोर्टों में यह भी आशंका व्यक्त की गई है कि चीन के साथ म्यांमार भी इसमें अपनी हिस्सेदारी चाहता है। चीन जिस प्रकार हिंद महासागर में अपना विस्तार कर रहा है वास्तव में यह न केवल भारतीय सुरक्षा बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक है।[9]

भारत तीन तरफ से समूह से घिरा है जिस कारण अतीत से ही हिंद महासागर से गहरा संबंध रहा है और नौ सैनिक दृष्टि से भी हिंद महासागर भारत के लिए केन्द्रीय स्थान रखता है। भारत के लिए आवश्यक यह है कि सागरीय शक्ति का विकास कर हिंद महासागर पर अपना कब्जा रखे क्योंकि न केवल चीन बल्कि अन्य देश अमेरिका, ब्रिटेन भी इस क्षेत्र में एकाधिकार प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। इन सब परिस्थिति के चलते भारत को इस क्षेत्र में कारगर कदम उठाने की आवश्यकता है भारत उचित कदम उठाए।

अब एशिया की तकदीर जापान या चीन पर आश्रित नहीं होगी बल्कि भारत एशिया में विकास इंजन बनने जा रहा है।[11] अमरीकी चीन संबंधों को लेकर अमेरिकी कॉंग्रेस की रिपोर्ट में इस बात का जिक्र किया गया है कि वष्हत एषिया इसमें से भी दक्षिण एशिया में बदलती परिस्थितियों के चलते चीन अपनी रणनीति मे बदलाव किया है। यह बदलाव भारत की बढ़ी साख को देखते हुए किया जा रहा है। इसका मुख्य कारण भारत की विकास गति को रोकना है। यही कारण है कि चीन पाकिस्तान को मोहरे के रूप में प्रयोग कर रहा है लेकिन हमारे प्यारे पड़ोसी पाकिस्तान को यह बात समझ में नहीं आ रही है।

दक्षिण एशिया में चीन की मंशा आर्थिक गतिविधियों को नियन्त्रित करना भी है। इसके साथ ही आतंकी और धार्मिक कट्टरता को काउंटर करने की भी उसकी मंशा है।[12] दक्षिण एशिया में भारत और चीन के बीच सामरिक प्रतिस्पर्द्धा न केवल आर्थिक एवं राजनीतिक है बल्कि हिंद महासागर में वर्चस्व को लेकर भी है। ऐसा लगता है कि चीन और भारत इस वास्तविकता को स्वीकार करने में समय लगा रहे हैं कि दोनों को जो बढ़ती राष्ट्रीय शक्ति और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के प्रक्षेप पर है तथा इस क्षेत्र में साथ–साथ रहना है। इस भावना का निर्माण करना होगा कि एक की जीत दूसरे की हार नहीं है।[13]

जिस तरह चीन की आर्थिक और सैन्य शक्ति का विस्तार हो रहा है और खुद को विश्व केन्द्र बनने का प्रयास कर रहा है उसी प्रकार वह क्षेत्रीय स्तर पर पूर्व, दक्षिण, उत्तर और पश्चिमी भाग में भी छाने का प्रयास कर रहा है। दक्षिण एशिया में जिसे भारत का घर, परिसर माना जाता है, वहाँ पर चीन की उपस्थिति एवं आर्थिक शक्ति और सैन्य सहायता प्रदान करने वाले देश की है साथ ही वह कूटनीतिक स्तर पर यहाँ अपनी स्थिति मजबूत करने में लगा हुआ है।

एक ओर चीन कहता है कि वह पड़ोसी देशो के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा, किंतु अप्रत्यक्ष रूप से सदैव वह उनकी अर्थव्यवस्थाओं, राजनीति में हस्तक्षेप करता रहता है। लेकिन वर्तमान स्थिति यह कि विष्वभर में चीन के आर्थिक और राजनीतिक हित विकसित हो चुके

हैं। उसने एशिया के कई देशो में अपने सैनिक अड्डे स्थापित कर दिए हैं जो कि न केवल भारत के लिए बल्कि विश्व के लिए चिंता का विशय है। वर्तमान में चीन अमेरिका के मध्य व्यापार युद्ध कर चल रहा है। चीन इस समय भारत, पाकिस्तान और म्याँमार का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है।

म्याँमार भारत और चीन दोनों के लिए सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण देश और हमारा पड़ोसी राज्य भी है। वहीं चीन को हिंद महासागर तक महत्वपूर्ण पहुँच उपलब्ध कराता है। बाँग्लादेश में चीन हथियारों की आपूर्ति करने के साथ ही साथ वहाँ सड़कों और बिजली घरों के निर्माण से अपनी मज़बूत उपस्थिति दर्ज करवा रहा है। भारत के पड़ोसी देशो को चीन के प्रभाव से हर हाल में बाहर निकालना होगा।

अफगानिस्तान को आशा है कि चीन अपने प्रभाव का प्रयोग करते हुए पाकिस्तान को अपनी भूमि को तालिबान की पनाहगार नहीं बनने दे जबकि वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान को आशा है कि अफगानिस्तान में चीनी उपस्थिति से भारत का प्रभाव वहाँ कम होगा। वहीं चीन दोनों देशो का प्रयोग अपने हित में कर रहा है। चीन पाकिस्तान के माध्यम से भारत के विकास को अवरुद्ध करने का लम्बे समय से प्रयास कर रहा है। चीन ने दक्षिण एशिया में एक हितकर देश की छवि बनाते हुए भारत–पाकिस्तान के मध्य आने का प्रयास किया जिसे भारत कभी भी स्वीकार नहीं करेगा। यह बात पहले ही भारत स्पष्ट रूप में विश्वस्तर पर कह चुका है।[14]

भारत सदैव ही एक शांतिप्रिय देश रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत ने कभी भी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया बल्कि सदैव ही अपने पड़ोसी देशो की सहायता की है लेकिन एशिया की वर्तमान पृष्ठभूमि में यह ओर अधिक आवश्यक हो गया है कि भारत अपने पड़ोसी देशों से संबंध और अधिक प्रगाढ़ करे। भारत ने वित्तीय वर्ष 2017–18 में नेपाल को दी जाने वाली आर्थिक सहायता जो कि 375 करोड़ थी उसे बढ़ाकर वित्तीय वर्ष 2018–19 में 650 करोड़ रुपये कर दिया है। दक्षिण एशिया में चीन की बढ़ती गतिविधियों ने भारत को ऐसा करने के लिए विवश कर दिया है। इसलिए भारत अपने पड़ोसी देषों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता को बढ़ा रहा है।[15]

अभी हाल ही ने भारत–नेपाल ने दो संयुक्त परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित किया। यह इस बात का प्रमाण है कि भारत अपने पड़ोसियों पर ध्यान दे रहा है। जो कि चीन को किसी भी स्थिति में रास नहीं आ रहा है। वर्ष 2019 में नेपाल भारत के मध्य ऊर्जा सहयोग बढ़ा है।[16]

आज भारत न केवल एशिया में वरन् विश्व में एक शक्ति के रूप में उभर रहा है और विश्व स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहा है। इसके उदाहरण हमें देखने को मिले हैं। इसका ताजा उदाहरण है डोकलाम विवाद। डोकलाम क्षेत्र में भारत और चीन के मध्य सैनिक तनातनी 16 जून 2017 को आरम्भ हुई जो कि 73 दिनों तक चली। इस विवाद के समय सम्पूर्ण विश्व की निगाहें भारत पर थी। भारत ने भी सफलतापूर्वक इसका सामना किया। अब प्रश्न यह उठता है कि डोकलाम विवाद क्या था ? डोकलाम क्षेत्र चीन और भूटान के मध्य एक विवादित क्षेत्र है। इसे लेकर चीन और भूटान के मध्य इसे लेकर यह सहमति है कि जब तक इसका हल नहीं हो

जाता तब तक इस क्षेत्र में दोनों देश यथास्थिति बनाये रखेंगे। लेकिन चीन अपने चिरपरिचित स्वभावनुसार इस क्षेत्र में अचानक सेनाएँ तैनात कर दी और साथ ही सड़क निर्माण कार्य भी प्रारम्भ कर दिया जिसका भूटान ने विरोध किया लेकिन साम्राज्यवादी चीन ने भूटान के इस विरोध की ओर ध्यान नहीं दिया, इसे अनदेखा किया। वहीं दूसरी ओर 1949 में भारत–भूटान ने मैत्री संधि की थी जिसके तहत भारत ऐसी स्थिति में सैनिक सहायता देने के लिए बाध्य है। इसी को ध्यान में रखते हुए और भूटान के अनुरोध पर डोकलाम क्षेत्र में अपनी सेना भेज दी। इसका एक अन्य कारण यह भी था कि डोकलाम पठार के नीचे भारत की मुख्यभूमि भी है। अगर चीन यहाँ पर सड़क निर्माण करता है तो यह भूटान के साथ–साथ भारत की सुरक्षा भी खतरे में पड़ जाती है।

अतः स्पष्ट है कि डोकलाम की सुरक्षा भारत की सुरक्षा का जिसे भारत ने सफलतापूर्वक हल कर लिया हालांकि चीन ने भारत पर दबाव बनाने का पूरा प्रयास किया किंतु भारत ने भी चीन को मुँहतोड़ जवाब दिया परिणामस्वरूप चीन को अपने कदम पीछे हटाने पड़े। यह भारत की कूटनीतिक जीत थी। इससे इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की साख बढ़ी क्योंकि भारत–चीन के मध्य पहले ही एक युद्ध हो चुका है जिसमें भारत हार गया था लेकिन डोकलाम विवाद से विश्व को यह संदेश मिला कि भारत हम पीछे नहीं हटेगा और अपने देश की सुरक्षा के लिए सक्षम है। एशिया में एक महाशक्ति के साथ उभर रहा है हमारा भारत।[17]

चीन ने केवल एशिया में बल्कि विश्व में अपनी पहुँच सफल बनाने में लगा है। पूर्वी अफ्रीकी मरुस्थल में स्थित जिबूती में चीन ने अपना नौ सैनिक अड्डे का निर्माण किया। चीन और अमेरिका में दक्षिण चीन सागर को लेकर पहले ही विवाद चल रहा है और चीन की यह पहल अमेरिकी रणनीतिकारों को चिंतित कर दिया है। चीन के नौ सैनिक अड्डे के निर्माण से अमेरिका खुश नहीं लेकिन दोनों देश अपने–अपने तर्क देते हैं। जिबूती पूर्वी अफ्रीका में स्थित एक देश है, जिसकी सीमाएँ उत्तर में इरीट्रिया से, पश्चिम और दक्षिण में इथोपिया से और दक्षिण पूर्व में सोमालिया से मिलती है इसके साथ ही अरब की खाड़ी और लाल सागर से भी इसकी सीमाएँ मिलती हैं यही इसकी महत्ता का कारण है।[18]

स्वतंत्रता के बाद से ही भारत दक्षिण एशिया में चीन के हस्तक्षेप व प्रभाव एवं नीति को लेकर चिंतित है। 2014 में चीन ने प्राचीन सिल्क रूट को पुनः नए रूप में प्रस्तावित किया। यह योजना पूर्व योजना का ही विस्तृत और परिवर्तित रूप है। इस परियोजना के अन्तर्गत श्री लंका, बांग्लादेश, मालद्वीप में चीन द्वारा बंदरगाह तथा अन्य सुविधाओं का विकास किया जाएगा। इस योजना का घोषित उद्देश्य चीन से हिंद महासागर होते हुए यूरोप तथा समुद्री मार्ग का विकास करना है लेकिन इसके पीछे चीन का उद्देश्य दक्षिण एशिया में अपना प्रभुत्व स्थापित करना तथा भारत को पीछे धकेलना है क्योंकि भारत ही एषिया में ऐसा देश है जो साम्राज्यवादी चीन को मुँहतोड़ जवान टक्कर दे रहा है।

दक्षिण एशिया के साथ–साथ दोनों देशो के बीच मध्य एशिया प्रशांत क्षेत्र में प्रभुत्व की प्रतियोगिता चल रही है। भारत ने जब लुक ईस्ट नीति को लॉंच किया तो चीन ने भी इसके उत्तर

में अपनी नीति बदली। साथ ही चीन दक्षिण चीन सागर में बढ़ती भारत की भूमिका से भी चिंतित है।[19]

दक्षिण चीन सागर भी एक महत्वपूर्ण समुद्री व्यापारिक मार्ग है जिस पर चीन अपना पूर्ण अधिकार जताता है जबकि अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय का निर्णय चीन के विरुद्ध आया जिसे चीन स्वीकार नहीं करता है। दक्षिण चीन सागर यह एक ओर से मल्क्का जल संधि तो दूसरी ओर प्रशांत महासागर से जुड़ा है। यही इसकी महत्ता का कारण है।[20]

चीन ने इस क्षेत्र में बमवर्षक विमान भी तैनात कर दिये हैं जिसका अमेरिका भी विरोध कर रहा है।[21] आस्ट्रेलिया ने चीन पर यह आरोप लगाया है कि चीन उसकी घेरलू राजनीति में दखल दे रहा है। सोफ्ट पावर पॉलिसी के तहत आगे बढ़ रहा है जो कि विश्व के लिए चिंताजनक है।[22]

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि चीन एशिया में अपनी धाक जमाने की पूरी कोशिश कर रहा है। भारत और चीन एशिया की सबसे उभरती शक्तियाँ हैं इसके साथ दोनों पड़ोसी भी हैं। दोनों देशो के हित एशिया और हिंद महासागर में टकरा रहे हैं। भारत चीन संबंधों में भारत के लिए सबसे जटिल स्थिति चीन, पाकिस्तान के बढ़ते सैनिक गठजोड़ की है जो कि निरन्तर बढ़ रहा है। चीन, पाकिस्तान का आर्थिक, सैनिक तथा तकनीकि सहायता प्रदान कर रहा है जिसका प्रयोग पाकिस्तान भारत के विरुद्ध कर रहा है। भारत को इस मित्रता से सतर्कता बरतनी चाहिए।[23]

अतः चीन को भी भारत की इस चिंता को समझना चाहिए। चीन ने भारत के मित्र राष्ट्रों में सेंध लगाई है। भारत को अपने पडोसियों की समस्याओं की ओर ध्यान देना चाहिए।[24]

आज की अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में दोनों देशो को समझना चाहिए कि दोनों देश अपने संबंध को सुधारें, उन्हें मधुर बनायें। भारत द्वारा मध्य एशिया से सीधा सम्पर्क करने के लिए चाबहार बंदरगाह को विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया है। दोनों देशो को एक दूसरे का विरोधी न होकर सहयोगी बनना चाहिए। संघर्ष की जगह सहयोग की भावना से काम करना चाहिए।[25]

सन्दर्भ ग्रंथ

1. शुक्ला कृष्णानंद, स्त्रातेजिक वातावरण, राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली
2. दृष्टि कंटेट अफेयर्स टुडे, अप्रैल 2018
3. माधव राम, असहज पड़ोसी युद्ध के 50 वर्षों बाद भारत और चीन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
4. CCC News 29 July 2017
5. दृष्टि कटेंट अफेयर्स, डेली अपडेट्स 29 नवम्बर 2019
6. www.welcomenri.com/useful
7. माधव राम, असहज पड़ोसी युद्ध के 50 वर्षों बाद भारत और चीन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
8. प्रतियोगिता दर्पण दिसम्बर 2017
9. शुक्ला, कृष्णानंद, स्त्रातोजिक वातावरण, राधा प्रकाशन, नई दिल्ली

10. वही पृ0 सं0 **30**
11. m.economictimes.com
12. m.patrika.com
13. southasianvoice.org 25th May 2019
14. orfonline.org 6 March 2018
15. m.patrika.com 21 March 2018
16. नवभारत टाइम्स 30 दिसम्बर 2019
17. प्रतियोगिता दर्पण जनवरी 2018
18. सिविल सर्विसेज़ क्रॉनिकल, अप्रैल 2017
19. प्रतियोगिता दर्पण जनवरी 2018
20. दृष्टि पत्रिका, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, 19 अक्टूबर 2019
21. B.B.C. News,20 मई 2018
22 दृष्टि कटेंट अफेयर्स टुडे, अप्रैल 2018
23. प्रतियोगिता दर्पण जनवरी 2018
24. समसामयिक घटना चक्र, मई 2018
25. दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे, अप्रैल 2018